28 AUGUST THURSDAY

35th Week • 240 Day

19/11/21 ①

B.A. Part I
Hindi Hons
Paper I
मध्यकालीन हिन्दी काव्य

डॉ० आनन्द कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर
हिंदी विभाग
एस०एन० सिन्हा कॉलेज
जहानाबाद

जायसी – गोरा-बादल युद्ध खंड (पद्मावत)

प्रश्न – प्रस्तुत पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या करें:—

सोलह सौ चंडोल सँवारे ।
कुँवर सँजोइल कै बैसारे ॥
पदमावति कर सजा बिवानू ।
बैठ लोहार न जानै भानू ॥
रचि बिवान सो साजि सँवारा ।
चहुँ दिसि चँवर करहिं सब ढारा
साजि सबै चंडोल चलाए ।
सुरँग ओढ़ाइ मोति बहु लाए ॥

उत्तर:— प्रस्तुत पंक्तियाँ भक्तिकाल के महान कवि जायसी के पद्मावत से ली गई हैं।
प्रसंग – राजा की मुक्ति के लिए आयी डोलियों को दिल्ली के महल में रखवाने की कामना के साथ पद्मावती की तैयारी का वर्णन प्रस्तुत पंक्तियों में किया गया है। अलाउद्दीन के कैदखाने से हम दोनों राजा रत्नसेन को छुड़ा लेना चाहती है।

मूल भाव – प्रस्तुत पंक्तियों का मूल भाव राजा रत्नसेन को अलाउद्दीन के कैदखाने से छुड़ाने की तैयारी का वर्णन है।

You do not drown by falling in the water; you drown by stying there.

AUG 2014

S	M	T	W	T	F	S
31					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

क्रमशः:—

19/11/21

[illegible]

[illegible]

कहानी – सुंदर रंग का कपड़ा।

क्रमशः